ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
गोविंद बल्लभ पंत कृषिऔर प्रौद्योगिकीविश्वविद्यालय
उधम सिंह नगर, पंतनगर, उत्तराखंड

मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक :05.09.2023

उधम सिंह नगर(उत्तराखंड) के मौसम का पूर्वानुमान – जारी करने का दिन :2023-09-05 (अगले5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2023-09-06	2023-09-07	2023-09-08	2023-09-09	2023-09-10
वर्षा (मीमी)	3.0	0.0	2.0	2.0	2.0
अधिकतम तापमान(से.)	35.0	34.0	33.0	34.0	33.0
न्यूनतम तापमान(से.)	20.0	21.0	21.0	22.0	22.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	85	65	70	60	75
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	45	50	60	55	60
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	6	10	6	6	7
पवन दिशा (डिग्री)	70	120	45	20	70
क्लाउड कवर (ओक्टा)	1	3	5	6	7

सम सारांश / चेतावनी:

पिछले सात दिनों (29 अगस्त-4 सितंबर) में 0.0 मिमी वर्षा दर्ज की गई और अधिकतम और न्यूनतम तापमान 33.5 से 35.0 डिग्री सेल्सियस और 23.8 से 26.0 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा। पिछले सप्ताह के दौरान अधिकांश दिन आसमान साफ रहा। सुबह की सापेक्ष आर्द्रता 0712 बजे 85 से 95% के बीच थी और शाम की सापेक्ष आर्द्रता 1412 बजे 59 से 66% के बीच थी। हवा की गति 0.2 से 3.8 किमी प्रति घंटा थी और हवा की दिशा ज्यादातर उत्तर-उत्तर-पूर्व की ओर थी। आगामी पांच दिनों के लिए पूर्वानुमान में हल्की बूंदाबांदी होने का अनुमान है अधिकतम और तथा न्यूनतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस और 20-22 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है । हवा की गति 6-10 किमी प्रति घंटा थी और दिशा अधिकतर उत्तर-पूर्व थी। हल्की से मध्यम वर्षा/तूफान इस अवधि के दौरान उधम सिंह नगर जिले में अलग-अलग स्थानों पर होने की संभावना है। जिले में शुष्क मौसम बने रहने का अनुमान है।

सामान्य सलाहकार:

विस्तारित सीमा पूर्वानुमान के अनुसार जिले के लिए साप्ताहिक औसत वर्षा 22.3 मिमी थी जिसे काफी हद तक कम बताया गया है और आगामी सप्ताह के लिए कम वर्षा की भविष्यवाणी की गई है। क्षेत्र के लिए एनडीवीआई समग्रता 0.3-0.4 के बीच है जो क्षेत्र में मध्यम कृषि शक्ति का संकेत देती है।किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पिछले सप्ताह के मौसम, मौसम पूर्वानुमान आदि की जानकारी के लिए "मेघदूत ऐप" डाउनलोड करें बिजली संबंधी जानकारी पाने के लिए कृषि मौसम संबंधी सलाह और "दामिनी ऐप"। मेघदूत और दामिनी ऐप्स कर सकते हैं गूगल प्ले स्टोर (एंड्रा इड उपयोगकर्ता) और ऐप सेंटर (आईओएस उपयोगकर्ता) से डाउनलोड किया जा सकता है। इससे उन्हें कृषि गतिविधियों के संबंध में सही निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

लघु संदेश सलाहकार:

क्षेत्र में हल्की बूंदाबांदी की भविष्यवाणी की गई है, इसलिए मिट्टी की नमी बनाए रखने और क्षेत्र में शुष्कता को रोकने के लिए फसलों में पर्याप्त सिंचाई करें।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	अवस्था	फ़सल विशिष्ट सलाह
चावल	कल्ले फूटना	फसल में अब बालियां बनना शुरू हो जाएंगी तो यूरिया की टॉप ड्रेसिंग के साथ-साथ खेत में उचित सिंचाई और जल निकासी का रखरखाव करना होगा। शुष्क परिस्थितियों में खेत में जल स्तर 1-1.5 सेमी बनाए रखें। बैक्टीरियल ब्लाइट के लक्षण जैसे पत्तियों पर पानी से लथपथ धब्बे और उनके धीरे-धीरे बढ़ने पर लंबी धारियां बन जाती हैं जो धीरे-धीरे हल्के भूरे रंग की हो जाती हैं। इस रोग को खेत में फैलने से रोकने के लिए खेत में जल जमाव की स्थिति न रखें और इसके साथ ही नाइट्रो जन का प्रयोग फिलहाल बंद कर देना चाहिए। अधिक रोग होने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 15 ग्राम + कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 500 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। छिड़काव 7-10 दिनों के अंतराल पे करना चाहिए। तना छेदक कीट यदि ईटीएल के ऊपर उपस्थिति है तो उस पर क्लोरान्ट्रा निलीप्रोले 20 एस.सी 150 मि.ली. या फ्लूबेंडिबें यामाइड 480 एससी 75 मि.ली. या फिप्रोनिल 5 एससी 1.0 लीटर या 600 ग्राम कार्टाप हाइड्रो क्लोराइड 50 डब्लूपी या 2.5 लीटर क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी प्रति हेक्टर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। आम कीट यानी धान फुदका के प्रकोप पर किसानों को ट्रा इफ्लूमेज़ोपायरिम 10 एससी 235 मिली/फिप्रोनिल 5 एससी 1000 मिली/बुप्रोफेज़िन 25 एससी 1 लीटर/ थियामेथोक्जाम 25 डब्लूएसजी 100 ग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से 500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। छिड़काव तने के पास करना चाहिए। कम संक्रमण की स्थिति में बुप्रोफेज़िन, अधिक संक्रमण की स्थिति में ट्रा इफ्लूमेज़ोपायरिम और तना छेदक+ब्राउन प्लांट हॉपर के हमले की स्थिति में फिप्रोनिल 5 एससी का उपयोग करना चाहिए।
गन्ना	गन्ना बढ़ाव चरण/ बुवाई	सबसे प्रचलित लाल सड़न रोग के लक्षण मानसून के मौसम के बाद प्रकट हो सकते हैं जो कटाई तक बने रहते हैं। इसके लिए किसानों को प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करना होगा और अपने खेतों को साफ रखना होगा। संक्रमित गन्नों को जड़ से उखाड़कर जला देना चाहिए । संक्रमित गन्नों को पूरी तरह नष्ट करना और उपचारित बीजों का उपयोग सर्वोत्तम निवारक उपाय हैं। आवश्यकतानुसार दो पंक्तियों के तीन डंठलों को एक साथ बांधना चाहिए (कैंची बांधनी चाहिए)। सफेद ग्रब का प्रकोप होने पर फिप्रोनिल 40 प्रतिशत और इमिडाक्लोप्रिड 40 प्रतिशत डब्लूजी 200 ग्राम प्रति एकड़ को 500 लीटर पानी में घोलकर खेत में डालना चाहिए। शरदकालीन गन्ने की बुआई की तैयारी उपचारित गन्ने से करनी चाहिए।
मक्का	वनस्पतिक विकास	जैसे ही भुट्टों में बीज भरने लगें, आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। कीट का प्रकोप होने पर उचित कृषि उपाय करना चाहिए। मैदानी क्षेत्रों में फॉल आर्मी वर्म के हमले की स्थिति में, क्लोरेंट्रा निलिप्रोल 18.5 एससी 0.4 मि.ली./लीटर पानी की दर से उपयोग करना चाहिए। मैंकोजेब या जिनेब 75 WP 1.5 -2.0 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर

		से 750- 800 लीटर पानी में ब्लाइट (पीले या भूरे रंग का अंडा जहाज आकार के धब्बे) लगने पर छिड़काव करें । दूसरा छिड़काव 10-15 दिन के अंतराल पर करना चाहिए।
मूँग	वनस्पतिक विकास	अंतिम माह में बोई गई फसल में निराई-गुड़ाई करनी चाहिए तथा फसल की आवश्यकता के अनुसार हल्की सिंचाई करनी चाहिए। सफेद मक्खी द्वारा प्रसारित पीले मोज़ेक वायरस की उपस्थिति पर, पाइरीप्रोक्सीफेन 10 ई.सी. 0.5 लीटर/हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में मिलाकर 10-12 दिनों के अंतराल पर डालें। किसानों को पीला मोज़ेक वायरस के प्रति प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करना चाहिए।
काला चना	वनस्पतिक विकास	अंतिम माह में बोई गई फसल में निराई-गुड़ाई करनी चाहिए तथा फसल की आवश्यकता के अनुसार हल्की सिंचाई करनी चाहिए। सफेद मक्खी द्वारा प्रसारित पीले मोज़ेक वायरस की उपस्थिति पर, पाइरीप्रोक्सीफेन 10 ई.सी. 0.5 लीटर/हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में मिलाकर 10-12 दिनों के अंतराल पर डालें। किसानों को पीला मोज़ेक वायरस के प्रति प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करना चाहिए।
सोयाबीन	फूल/फली बनना	यदि वर्षा पर्याप्त न हो तो फूल एवं फलियाँ बनने पर आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई करनी चाहिए। सफेद मक्खी द्वारा प्रसारित पीले मोज़ेक वायरस की उपस्थिति पर, पाइरीप्रोक्सीफेन 10 ई.सी. 0.5 लीटर/हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में मिलाकर 10-12 दिनों के अंतराल पर डालें। किसानों को पीला मोज़ेक वायरस के प्रति प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करना चाहिए।
मूँगफली	वनस्पतिक विकास	टिक्का रोग में पत्तियों पर हलके भूरे रंग के गोल धब्बे बन जातें है जिसके चारों ओर निचली सतह पर पीले घेरे होते है। इसके उपचार हेतु खड़ी फसल पर क्लोरोथेनोनिल 2 कि.ग्रा./ मैंकोजेब 80% 2 कि.ग्रा./ प्रोपिकोनाज़ोले 25 ई.सी. 500 मि. ली. मात्रा 800 से 1000 ली. पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से 2-3 छिड़काव 10-12 दिन के अंतराल पे करें। सभी कृषि गतिविधियाँ साफ़ मौसम की स्थिति में की जानी चाहिए ।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	अवस्था	बागवानी विशिष्ट सलाह
गोभी	रोपाई	फूलगोभी की पछेती किस्मों, पत्तागोभी की किस्मों और नोल-खोल की रोपाई इस महीने में की जा सकती है और यह तब किया जाना चाहिए जब अंकुर 4-6 सप्ताह के हो जाएं या वे 4-6 पत्ती अवस्था प्राप्त कर लें। रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए।
मूली	बुवाई	इस महीने में मूली की यूरोपीय किस्में जैसे पूसा हिमानी, पूसा मधुशाला, स्कारलेट ग्लोब, स्कारलेट लॉन्ग, गाजर की एशियाई और यूरोपीय किस्में जैसे पूसा केसर, पूसा मेघाली, अर्का सूरज, पूसा वृष्टि, पूसा रुधिरा और चुकंदर की किस्में जैसे क्रिमसन ग्लोब, अर्ली वंडर, डेट्रॉइट गहरा लाल बोई जा सकती हैं। शुष्क मौसम की स्थिति में बुआई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए। शुष्क मौसम की स्थिति में बुआई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए।
पालक	बुवाई	मैदानी इलाकों में, उपचारित पालक के बीजों को 25-35 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर की दर से लाइन से लाइन और बीज से बीज की दूरी क्रमशः 15-20 सेमी और 5-7 सेमी, 2.5 सेमी की गहराई पर बोया जा सकता है।
मिर्च	परिपक्वता/तुड़ाई	मिर्च की फसल का ऊपरी तना सूखने पर तथा काला पड़ जाने पर फसल को बचाने के

		लिए संक्रमित शाखाएं तोड़ कर हटा देना चाहिए। फसल को सड़ने से बचने के लिए 0.1% कैर्बेन्डाजिम घोल का छिड़काव करें।
पपीता	छोटा कोमल पौधा	पपीते में कॉलर रॉट रोग लगने पर मेटलैक्ज़िल + मैन्कोजेब (रिडोमिल गोल्ड) का 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से प्रयोग बहुत प्रभावी पाया गया है। छिड़काव 10 दिनों के अंतराल पर दोहराया जा सकता है।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
गाय	मादा बछियो का माँ से दूध छः महीने के बाद ही छुड़वाना चाहिए, ताकि उनका शारीरिक विकास अच्छे तरीके से हो सके।
भैंस	फूटरॉट ' रोग को रोकने के लिए, खुरों को कम से कम 3 दिनों तक सुबह और शाम के समय 2-3 मिनट के लिए 10% फॉर्मेलिन घोल या 5% नीले थोथे में डुबोया जाना चाहिए।
बकरी	ग्रामीण छेत्र में भेड़ एवं बकरियों को टिटेनस टॉक्साईड के 2 टिक्के एक माह पर, दूसरा 5 माह पर अवश्य लगवायें, जिससे नवजात मेमनों को टिटनेस नमक बीमारी न हो।